International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 08-11-2025, Accepted: 07-12-2025, Published: 22-12-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 152-154

रामदरश मिश्र के काव्य में प्रेम और करुणा

डॉ. शशिकांत मिश्र[1], अंशु कुमारी[2]
[1] सह– आचार्य, हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, साम्बा जम्मू–कश्मीर, भारत
[2] शोधार्थी, हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, साम्बा जम्मू–कश्मीर, भारत

सारांश
नैसर्गिक सृष्टि का मूल तत्व और कुछ नहीं बल्कि प्रेम ही है और यह प्रेम अनिर्वचनीय है. इसीलिए तो महर्षि नारद को कहना पड़ा था 'अनिर्वचनीय प्रेम स्वरूपम', अर्थात प्रेम शब्दातीत है एवं अपरिभाषित है. इस नैसर्गिक प्रेम के प्रत्येक पक्ष में हमेशा नवीनता झलकती है, जिससे कि समस्त सृष्टि सदैव गत्यात्मक बनी रहती है। वास्तव में प्रेम ही जीवन है। प्रेम जब सांसारिक मोहमाया को त्याग कर लौकिक से पारलौकिक की ओर परिणति पाता है तब हम उसे भक्ति कहते हैं और भक्ति तो इस सृष्टि के नियंता ईश्वर की करुणा ही है. दूसरी ओर प्रेम व्यक्तिगत भी हो सकता है, मगर करुणा व्यष्टि से समष्टि की परिचायक है। करुणा समस्त चराचर को सम्यक दृष्टि से देखती है। साहित्य यदि समाज यां जनता की चित्तवृति का संचित प्रतिबिम्ब है तो प्रेम और करुणा उस जनता की चित्तवृति का सबसे मूल्यवान आधार स्तंभ है. यही प्रेम और करुणा ही व्यक्ति को संवेदनशील बनाती है।

मूल शब्दः अनिर्वचनीय, सौंदर्य, नैसर्गिक, वनस्थली, नवोन्मेषशालिन

प्रस्तावना
अपने जीवन के सौ वसंत के सौंदर्य को आत्मसात् करने वाले हमारे वयोवृद्ध कवि रामदरश मिश्र जी की कलम ने अपनी प्रखर अनुभूति के आधार पर कई विधाओं में रचनाएं रच कर हिंदी साहित्य संसार की श्रीवृद्धि में अभूतपूर्व समर्पण दिखाया है। कहने का अभिप्राय यह है कि सौंदर्य की छटाओं से ओतप्रोत कवि रामदरश मिश्र के हृदयाकाश से कईं ऐसी रचनाओं की स्रोतस्विनी प्रवाहित हो गई है जिसके पठन–मनन से कई वंचितों की चेतना जग उठी है। चेतना की बात इसलिए हमने की है क्योंकि प्रेम तथा सौंदर्य का पहला कार्य ही चेतना को उद्भासित करना है और यह उद्भासित चेतना ही सत्यम्–शिवम् और सुंदरम् की सही पहचान कर सकती है। जीवन की शतायु पर रहकर भी वर्तमान तक प्रेम और करुणा के चितेरे कवि रामदरश जी की कलम रुकी नहीं है। इनके द्वारा कही गयी एक पंक्ति, "कुछ फूल, कुछ कांटें हमने आपस में बांटें यात्रा के हर मोड़ पर हमने एक दूसरे का इंतज़ार किया है हाँ, हमने प्यार किया है।" इस प्रकार अपनी कलम के माध्यम से जो प्रेम इनकी चेतना से उदघाटित हुआ उसकी स्पष्ट झलक हम इन पंक्तियों में देख सकते हैं। रामदरश मिश्र जी ने इसी नैसर्गिक प्रेम और करुणा को अपनी नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा से जोड़कर विस्तृत साहित्य की वनस्थली तैयार की है, जिस वनस्थली में अनेक फूल हैं। इसी वनस्थली के कुछ फूलों की सुगंध हम उनकी विभिन्न साहित्यिक विधाओं में देख सकते हैं। इस प्रकार उन्होनें साहित्य की एक विस्तृत इकाई प्रस्तुत कर दी है।

प्रकृति की समरसता को रचनाओं में उकेरने वाले कवि रामदरश मिश्र की रचनाओं में प्रेम और करुणा कूट –कूट कर भरी है. प्रेम की दुनिया में जीए तथा करुणा के उच्छवास में अपनी रचनाओं को आकार देने वाले रामदरश मिश्र जी की एक ग़ज़ल जिसका नाम है 'दूर घर नहीं हुआ' जिसमें हम घर के प्रति उनके प्रेम और करुणा भाव को हम देख सकते हैं। यहाँ घर का अर्थ हम मूल तत्व प्रेम से भी समझ सकते हैं क्योंकि प्रेम ही परिवार की नींव होता है यही प्रेम परिपक्व हो कर एक करुणामय भाव में परिवर्तित हो जाता है। पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं:–

चाहे जहाँ रहा मैं, दूर घर नहीं हुआ।
होने को तो हो जाता जुदा, पर नहीं हुआ।[1]

वास्तव में कवि कविता नहीं रचता है, कविता स्वतः ही कवि के अंतर्मन से उत्पन्न हो जाती है। महर्षि वाल्मीकि जी को ही यदि हम देखें जिन्होनें देखा कि क्रौंच पक्षियों का एक जोड़ा जो अपने प्रेम क्रीड़ा में मग्न था तभी एक व्याध ने उनमें से नर क्रौंच को अपने बाण से मार गिराया वहीं रोते हुए मादा क्रौंच विलाप करती हुई दिखाई देती हैं। इस हृदयविदारक घटना को देख वाल्मीकि जी का हृदय इतना द्रवीभूत हुआ कि उनके मुख से एक श्लोक फूटता है "मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः। यत्क्रौंचमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम् ॥" जिसका अर्थ हैः "हे निषाद (शिकारी)! तुम्हें कभी शाश्वत शांति (प्रतिष्ठा) प्राप्त न हो, क्योंकि तुमने प्रेम में लीन क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक को मार डाला है।" यही श्लोक एक कविता का रूप लेता है और 'रामायण' जैसे महान धार्मिक ग्रन्थ की रचना होती है। वरिष्ठ तथा प्रबुद्ध कवि सुमित्रानंदन पन्त की एक पंक्ति दृष्टिगोचर है "वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान, निकल कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान" इसी आह और वियोग से ही सृजनात्मक शक्ति अपनी चरम परिणति पर पहुँचने के लिए लालायित हो जाती है और अंतिम परिणति में आकर एक कविता, उपन्यास, कहानी, ग़ज़ल इत्यादि विधाओं का रूप ग्रहण करती है। हमारे प्रबुद्ध और उच्चकोटि के विद्वान् साहित्यकार रामदरश मिश्र जी भी इस आह और वेदना से अछूते नहीं रहे होंगे इसी आह और वेदना के गान ने उन्हें आज भी अपने जीवन की शती वर्ष में भी सदैव सृजनशील बनाए रखा है।

रामदरश मिश्र जी की कविताओं में हमें पीड़ितों, लाचारों के प्रति सहानुभूति देखने को मिलती है। कविता के साथ–साथ अन्य विधाओं जैसे उपन्यास में भी वे हमें ऐसे चरित्रों के साथ खड़े मिलते हैं पंक्तियाँ देखें:–

टूटे तारों से हिलते हैं यहाँ–वहां रिश्ते–नाते
कविता बोली मत उदास हो कल फिर नई सुबह होगी
फिर भी जानें क्यों लगता कल धरती छंदमयी होगी।[2]

रामदरश मिश्र जी प्रथम काव्य संग्रह 'पथ के गीत' जिसमें प्रेम और करुणा भाव से ही वह समाज में हो रहे विभिन्न प्रकार के अत्याचारों, विषमताओं, शोषण और दमन के विरोध में भी अपनी आवाज़ उठाते हैं, यह आक्रोश मात्र सतत आक्रोश नहीं है, इस

आक्रोश में व्यक्ति को एक नवीन जीवन मूल्य और हारे हुए को जीवन में आगे बढ़ने की सीख मिलती है। पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं:–

आज अग्नि के कुंजों से झर रही मधुर झनकार
नई ज्योति उठ खड़ी फाड़कर धुएं की दीवार।[3]

इनके "बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ" काव्य संग्रह की अगर हम बात करें तो उसमें बहुत सी विशेषताएं देखने को मिलती हैं जैसे लोक संस्कृति का स्वस्थ और आकर्षक रूप, संवेदना की गहनता, प्रकृति प्रेम इत्यादि। लोक संस्कृति को जानने वाला ही उसके स्वस्थ और आकर्षक रूप की परिकल्पना कर सकता है। सच्चा प्रेमी ह्रदय ही करुणा भाव से ओतप्रोत हो सकता है। मिश्र जी केवल अन्तरंग अनुभूतियों में ही डूबकर नहीं रह जाते वरन् वैषम्यमूलक त्रासद् परिवेश को भी अत्यंत संवेदनशीलता और गहरी ईमानदारी के साथ चित्रित करते हैं। कहते भी हैं न सच्चा कवि मन, सच्चा प्रेमी मन और सच्चा करुणामयी व्यक्ति उसकी आस्था कभी टूटती नहीं है चुप्पियाँ टूटन और उदासी झेलता हुआ भी कवि मन आस्थावान बना रहता है पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं:–

ओ शाम!
नहीं मेरी यह विवश असहायता जीवित सदा को
अभी बीमार हूँ तो क्या
उठूँगा एक दिन
तब खुशबुओं की ताजा हवाएँ
खुशबुओं से मुझे धो देगी।[4]

रामदरश मिश्र जी बहुमुखी प्रतिभा से लबरेज़ हैं। उनका करुणामयी मन सृजनशीलता में ही रमता है उनकी कविताओं में अन्धकार से उभरकर रौशनी तक की शक्ति हमें देखने को मिलती है। उनकी एक कविता जिसका शीर्षक है 'सुबह, अन्धकार और हरी रोशनी' पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं:–

मुझे लगता है मेरे हाथ में भी
एक हरी लालटेन आ गई है
पीठ पर लाशें बँधी हैं
मगर हाथ में एक हरी रौशनी है।[5]

(उपर्युक्त हरी रौशनी नवीन जीवन और सकारात्मकता, अन्याय से न्याय की प्रेरणास्रोत बनती है।)
रामदरश मिश्र जी की करुणा आम आदमी, प्रकृति, नारी आदि के पक्ष में उभरती है नारी जिस भयंकर यातना से गुज़रती है उनका कवि मन उस यातना पर भी उमड़ता है उसी को आधार बनाकर उनकी एक कविता जिसका शीर्षक ही है 'नारी यातना पर कविता' जिसकी पंक्तियाँ द्रष्टव्य है:–

दरवाजे पर दस्तक हो रही थी
पत्नी ने द्वार खोलकर देखा
एक औरत फटेहाल–सी खड़ी है
औरत है या मर्द की झड़ी है[6]

मर्यादाओं को बनाये रखने के लिए एक औरत जिल्लत भरी ज़िन्दगी भी कैसे हंसते मुस्कुराते व्यतीत करती है उस पर भी मिश्र जी की कलम शांत नहीं रही उनका संवेदनशील मन 'मर्यादा के नाम पर' कविता में बोल उठता है। पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं:–

उसने अपना जीवन कहाँ जिया
वह तो दूसरों के लिए जीती रही
मर्यादा के नाम पर
जो भी विष दिया जाता रहा उसे पीती रही।[7]

रामदरश मिश्र जी का करुणामय ह्रदय प्रकृति के प्रेम में भी अत्यंत प्रगाढ़ता के साथ उमड़ आता है। एक चिड़िया के हवाले से कवि मन प्रकृति प्रेम और पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति समाज में जागरूकता लाने का प्रयास करता है प्रस्तुत कविता में चिड़िया के माध्यम से कवि ने ये उपदेशात्मक सीख हमारे समक्ष प्रस्तुत की है कविता का शीर्षक है 'चिड़िया' पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं:–

चिड़िया उड़ती हुई कहीं से आई
बहुत दूर तक इधर उधर भटकती हुई
अपना घोंसला खोजती रही
आज जंगल में कोई आदमी आया था क्या?[8]

इतना ही नहीं प्रकृति के प्रति उनका झुकाव उन्हें सतत आनंदित करता है उनकी कविताओं में सारे मौसम अपने आंतरिक प्रेम और करुणा के सौन्दर्य के आनंदस्वरूप में चित्रित हुए हैं उनकी एक कविता जिसका शीर्षक है 'बाहर तो बसंत आ गया है' जिसमें प्रकृति का आनंद हमें बंद कमरों में ना दिखाकर बाहर उससे रु–ब–रु होने की प्रेरणा देता है। पंक्तियाँ द्रष्टव्य है:–

तुम कब तक प्रतीक्षा करते रहोगे बसंत की.......
बाहर तो बसंत आ चुका है।[9]

(प्रकृति से मिलन एक करुणामय ह्रदयी व्यक्ति ही कर सकता है।)
रामदरश मिश्र जी की एक कविता जिसका शीर्षक है 'चप्पल' उसमें वे कहते हैं एक चप्पल भी हमें व्यक्ति के होने का एहसास करवाती है। कवि का प्रेमी और करुणामयी ह्रदय कहता है कि चप्पल जब तक बाजार में होती है तब तक वह एक वस्तु होती है और जैसे ही वह किसी के चरण की हो जाती है तो फिर वह बाजार की एक वस्तु न रहकर एक व्यक्ति बन जाती है और वह चप्पल भी हमें मानवीय प्रेम और करुणामय ह्रदय का एहसास करवाने लगती है। पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं:–

हाँ किसकी चप्पल है यह?
देर तक निहारता रहा.....
फिर धीरे–धीरे उसमें से उभरने लगी
एक शरारती शक्ल हँसती खिलखिलाती –सी[10]

(चप्पल से एक शरारती शक्ल का उभरना यहाँ हमें व्यक्ति प्रेम और संवेदनशील होने का एहसास करवाता है।)
रामदरश मिश्र जी मध्यवर्गीय जीवन की निराशा, विफलता, पीड़ा आदि को सहज होकर सही रूप में व्यक्त करते हैं। नयी कविता ने मध्यवर्गीय निराशा, दुःख–दर्द को अपने काव्य का केन्द्रीय विषय बनाया था, और इस विषय को नए कवियों ने बेहद अतिरंजनात्मक और कुछ–कुछ रूमानी रूप में अभिवयक्त किया, परन्तु मिश्र जी ने सच को उसके सही संदर्भ में देखा और बड़ी ही सरलता के साथ अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। यह उनका अन्वेषित केन्द्रीय विषय न होकर उनका जीया हुआ अनुभव संसार है, इसलिए वह इस वर्ग के साथ बहुत ही आत्मीयता से पेश आते हैं जो कि उनके संवेदनशील ह्रदय को प्रमाणित करता है। इस वर्ग का एक दृश्य–चित्र मिश्र जी इस प्रकार खींचते हैं, पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं:–

दूसरे दर्जे के डिब्बे में
अलग–अलग बैठे हुए
तीन यात्री
तीनों के हाथों में
पुस्तकें खुली हैं
मगर अर्थ अलग–अलग[11]

कवि के भीतर जो तड़प और पीड़ा है, वह जीवन जीने और मानवीय आशय को पहचानने की करुणामय विचारों की परिचायक है। उनकी कविताओं में एक सुरक्षित और मजबूत भविष्य की आकांक्षा यत्र–तत्र दिखाई पड़ती है।

प्रकृति के प्रति मिश्र जी को प्रेम और सहानुभूति बचपन से ही रही है। कवि रामदरश मिश्र जी का प्रकृति के साथ अटूट सम्बन्ध रहा है। उनकी कविताएं पढ़ने–गुनगुनाने के लिए पलटने पर बहुत से गीतों की भागीरथी बहुत पास से होकर गुजरती हुई प्रतीत होती है। उनका एक गीत 'क्षितिज की धूसर डगर पर एक जीवन चल रहा है' 1946 में लिखे उनके इस गीत में ही कहीं उनकी संवेदना भी ठिठकी हुई मिलती है। प्रकृति की गोद में पले –बढ़े हुए मिश्र जी कभी बादल तो कभी नदी, कभी बसंत, कभी शरद, कभी फागुन के गीत गाते हुए मिलते हैं उनके जीवन के यथार्थ से उपजी कविता जिसकी पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं:–

मैं आषाढ़ का पहला बादल
मेरी राह न बांधों।[12]

फागुन, शरद, चौत और अन्य सभी ऋतुओं पर भी उनकी कविताएँ मिलती हैं फागुन की रात, प्रात तथा फागुन के दिन के सब उल्लास और संवेदना उनकी कविताओं में देखने को मिलती है। शरद ऋतु पर आधारित उनकी एक कविता जिसका शीर्षक है 'ओ नए शरद' पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं:–

स्वागत है ओ नए शरद!
तुमने मेरी आत्मा को
मिटा–मिटा कण–कण में
जीवित किया
बूँद को पारावार कर दिया।[13]

इस प्रकार हमें प्रकृति के प्रति उनके स्नेह, प्रेम और करुणा की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

मिश्र जी ने प्रकृति के प्रति प्रेम और करुणा के भाव बहुत ही मार्मिकता से अभिव्यक्त किए हैं। प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, अकाल आदि के प्रति इनकी उदासीनता भी देखने को मिलती है। रामदरश मिश्र जी का गाँव का घर नदियों के निकट रहा है। इसलिए उन्होंने नदियों की हाहाकरी बाढ़ भी देखी है और सूखती तन्वंगी नदियों की कराह और आह भी सुनी है। धीरे–धीरे नदियों पर बाँध बनते गए, नदियाँ सूखती गयीं कवि मन इस दृश्य से कराह उठता है कवि मन आंतरिक वेदना से भर जाता है। जल और नदियों के सूखते जाने को लेकर कवि– मन गा उठता है:–

छोड़ हमें प्यासा का प्यासा नदियाँ कहाँ चली जाती हैं?[14]

मिश्र जी बहुत ही संवेदनशील ह्रदयी हैं इसमें कोई भी दोराय नहीं हैं उनकी संवेदना गरीब दबे कुचले समाज पर अधिक देखने को मिलती है उनकी एक 'कविता नया वर्ष: शहर –परिभ्रमण' इस कविता में पुल के ऊपर रंग–बिरंगे गुब्बारों की तरहं उड़ती हुई सवारियों को देखता है और तभी दूसरी ओर उसकी दृष्टि नीचे ठंडी रेत में ठहरी हुई ज़िन्दगी को देखती है जिसे ऊपर की परछाइयां कुचलती हुई भाग रही हैं नजूमी और उसके सामने खुलने वाले हाथों के प्रति कवि करुणार्द्र हो उठता है और कहता है–

फुटपाथ पर नजूमी बैठा है
तोता लिए हुए
जब कोई हाथ नहीं होता
सामने की टूटी दीवार की दरारें पढ़ता रहता है।[15]

इस प्रकार हम बहुत सी कविताओं में इनके आंतरिक प्रेम और करुणामयी ह्रदय की स्पष्ट झलक देख सकते हैं, ऐसे ही 'पगडंडी' नामक कविता में भी बेकारी के मारे हुए, हारे–थके पाँवों, ज़िन्दगी से हारी हुई बेबस आकृतियों के प्रति कवि की करुणा बार–बार जाग उठती है।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि प्रेम और करुणता की समरसता को जीवन का आदर्श मानते हुए निरंतर कर्मशील रहे कवि रामदरश मिश्र जी वास्तव में प्रकृति की गोद में रहकर सदैव अपने काव्य के माध्यम से प्रेम और करुणा जैसी रागात्मक संवेदनशीलता से सदैव लबरेज़ बने रहे। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व ने सौन्दर्य युक्त सृजनशक्ति से पाठक वर्ग को परिचित करवाया है। इनकी रचनाओं में हमें अकाट्य जीवन्तता देखने को मिलती है। प्रसंगवय यह बताया जा सकता है कि एक साक्षात्कार में जब इन्हें पूछा गया था कि मिश्र जी, आपकी इतनी दीर्घायु के होने का क्या कारण है? तब मिश्र जी ने बड़ी ही सादगी और सहजता से उत्तर देते हुए कहा था कि शायद इसका कारण मेरा अधिक महत्वाकांक्षी न होना रहा हो, बाकि सब तो ऊपर वाले के हाथ में है। इस प्रकार उन्होनें अपने जीवन में कर्मशीलता को सदैव सारथी बनाया है उनकी ग़ज़ल की एक पंक्ति जिसे उनके जीवन की पंच लाइन भी कहा जाता है कि

"बनाया है मैनें ये घर धीरे–धीरे/ खुले मेरे ख़्वाबों के पर धीरे–धीरे/ किसी को गिराया न ख़ुद को उछाला /कटा ज़िन्दगी का सफ़र धीरे–धीरे/जहाँ आप पहुंचे छलांगे लगा कर/ वहां मैं भी पहुंचा मगर धीरे–धीरे।"

यही गुण उनकी रचनाओं में प्रेम और करुणा के साथ–साथ सत चित आनंद की प्रस्तुति करता है।

संदर्भ सूची

1. निछल ओम, रामदरश मिश्र जीवन और साहित्य, सर्वभाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.31
2. निछल ओम, रामदरश मिश्र जीवन और साहित्य, सर्वभाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.118
3. मिश्र डॉ. सविता समकालीन काव्य – परिदृश्य और रामदरश मिश्र का काव्य, नमन प्रकाशन, नई–दिल्ली पृ.73
4. मिश्र डॉ. सविता, समकालीन काव्य – परिदृश्य और रामदरश मिश्र का काव्य, नमन प्रकाशन, नई–दिल्ली, पृ. 75
5. सं निछल ओम, प्रतिनिधि कविताएं रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई–दिल्ली, पृ.64
6. वही पृ.113
7. वही पृ.126
8. निछल ओम, प्रतिनिधि कविताएँ रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.81
9. वही पृ.76
10. सं. निछल ओम, प्रतिनिधि कविताएँ रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई–दिल्ली, पृ.101
11. मिश्र अल्पना, स्वातंत्र्योत्तर कविता और रामदरश मिश्र का काव्य वैशिष्ट्य, अतुल्य पब्लिकेशंस, दिल्ली, पृ.63
12. सं. निछल ओम, प्रतिनिधि कविताएँ रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई–दिल्ली, पृ.9
13. सं. निछल ओम, प्रतिनिधि कविताएँ रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई–दिल्ली, पृ.40
14. सं. निछल ओम, प्रतिनिधि कविताएँ रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई–दिल्ली, पृ.14
15. मिश्र डॉ. सविता, समकालीन काव्य – परिदृश्य और रामदरश मिश्र का काव्य, नमन प्रकाशन, नई–दिल्ली, पृ 224